काँटों के सिर पर कमल-सा ताज

डॉ. किशोर पँवार

ज़रा इन फूलों को निहारो! कितने अद्‌भुत, कितने रंगीन, कितने भव्य लगते हैं ये। नारंगी, जामुनी, रानी, सिन्दूरी, केसरिया, हल्के पीले – कौन-सा रंग है जो प्रकृति ने नहीं भरा है इन रेगिस्तानी फूलों में। लगता है रेगिस्तान में प्रकृति इन फूलों से होली मनाती है। जहाँ, मीलों रेत ही रेत होती है, पानी का जहाँ नामों निशान नहीं होता। वहाँ केवल काँटों से भरे माँसल छोटे-बड़े पेड़-पौधे ही हैं। परन्तु रंग भरपूर हैं। गुलज़ार। यह जगह है उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका। ये पौधे मैक्सिको, सोनावा और मोजेव रेगिस्तान के बाशिन्दे हैं।

(शेष भाग कवर 3 पर)

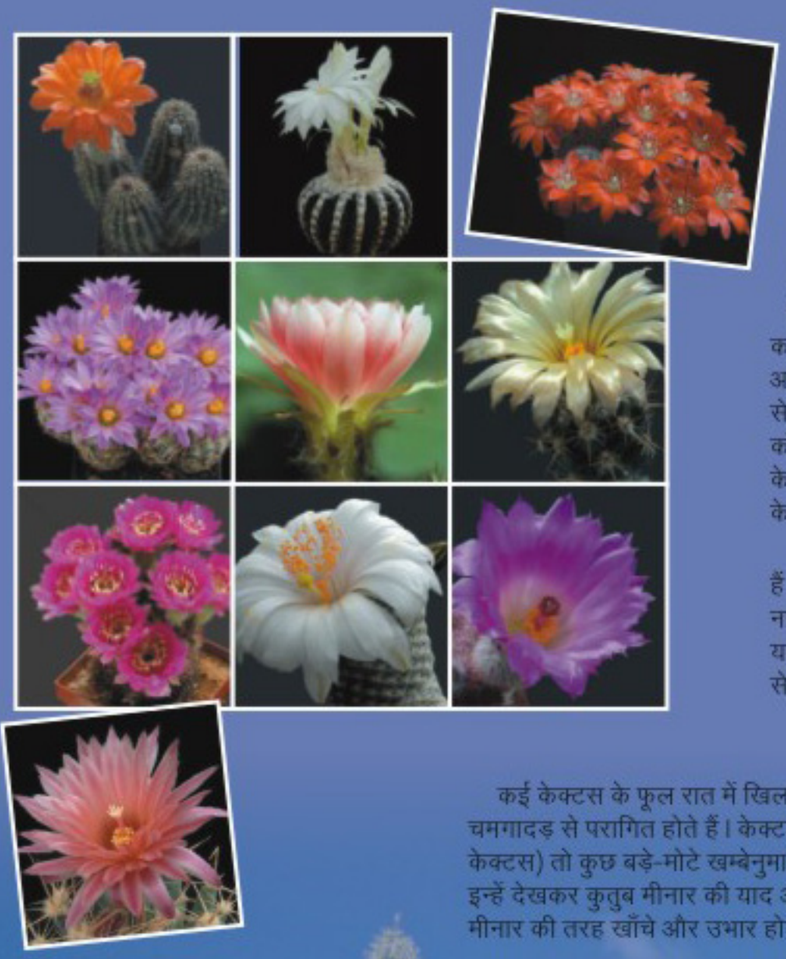

इन्हें बाग-बगीचों और घरों में शोभादार पौधों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। केक्टस विशिष्ट एवं असामान्य पौधे हैं। मसलन, इन पर हरी पत्तियाँ नहीं पाई जातीं। पूरा शरीर काँटों से ढँका रहता है। पत्तियों की जगह तना ही हरा होकर भोजन बनाने का काम करता है। ये तमाम अनुकूलन पानी बचाने एवं तेज़ धूप से बचने में सहायक हैं। पत्तियाँ काँटों में बदल जाती हैं। यही केक्टस की खास पहचान है। केक्टस यानी काँटों वाले पौधे।

केक्टस के फूल काफी बड़े होते हैं जो काँटों की तरह ऐरीओल नाम की रचना से निकलते हैं। यानी जहाँ से काँटे निकलते हैं वहीं से फूल निकलते हैं।

कई केक्टस के फूल रात में खिलते हैं जो रात्रि चर कीटों एवं चमगादड़ से परागित होते हैं। केक्टस के कुछ पौधे मटके जैसे (बेरल केक्टस) तो कुछ बड़े-मोटे खम्बेनुमा (सगुआरो केक्टस) होते हैं। इन्हें देखकर कुतुब मीनार की याद आती है। क्योंकि इन पर भी मीनार की तरह खाँचे और उभार होते हैं।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)